योएल

1 याहवे का संदेश जो पतुएल के बेटे
योएल को मिला, वह यह है : 2 हे
पुरनियो, सुनो, हे देश के सभी निवासियो,
बड़े ध्यान से सुनो! क्या ऐसा कुछ तुम्हारे
समय में कभी हुआ था? 3 अपने बाल-बच्चों
को यह सब बताओ, और वे अपने बच्चों से
और फिर वे भी अपनी आनेवाली पीढ़ियों
से। 4 जो कुछ गाजाम नाम टिड्डी से बच गया
था; उसे अर्बे नाम टिड्डी चट कर गई। जो कुछ
अर्बे नाम टिड्डी से बचा; उसे येलेक नाम टिड्डी
ने खा लिया और जो कुछ येलेक नाम टिड्डी
से बचा; उसे हासील नाम टिड्डी ने खा लिया।
5 हे मतवालो, जाग उठो, और रो और हे सब
दाखमधु पीने वालो, नए दाखमधु के कारण
हाय, हाय, करो; क्योंकि वह तुम्हें अब न
मिल सकेगा। 6 देखो, मेरे देश पर एक देश ने
हमला किया है। वह देश ताकतवर है, और
उसके लोग गिनती में बहुत हैं। उसके दाँत
शेर के से और दाढ़ शेरनी की तरह हैं। 7 उसने
मेरी अंगूर की लता को उजाड़ डाला है, और
मेरे अंजीर के पेड़ को तोड़ डाला है। उसने
उसकी सब छाल छीलकर उसे गिरा दिया
है, और उसकी डालियाँ छिलने से सफेद हो
गई है। 8 जिस तरह पत्नी अपने पति के लिए
कमर की टाट बान्धे हुए रोती रहती है, वैसे
ही तुम भी विलाप करो। 9 याहवे के भवन में
न तो अन्नबलि और न अर्घ आता है। उसके
सेवक जो पुरोहित हैं, वे रो रहे हैं। 10 खेती
खराब हो गई है, ज़मीन रो रही है; क्योंकि
अनाज बर्बाद हो चुका है, नया दाखमधु सूख
चुका है, और तेल भी। 11 हे किसानो, शर्म
करो, हे दाख के बगीचों के मालियो, गेहूँ और
जौ के लिए हाय-हाय करो; क्योंकि खेती मारी
गई है। 12 दाखलता सूख चुकी है, अंजीर का
पेड़ कुम्हला गया है। अनार, ताड़, सेव, यहाँ
तक कि मैदान के सभी पेड़ सूख चुके हैं; और
लोगों की खुशी जाती रही है। 13 हे पुरोहितो,
कमर में टाट बान्धकर छाती पीट-पीट के
रोओ! हे वेदी के टहलुओ, हाय-हाय, करो।
हे मेरे परमेश्वर के टहलुओ, आओ, टाट
ओढ़े हुए रातों को काटो! क्योंकि तुम्हारे
परमेश्वर के घर में अब कोई अन्नबलि और
अर्घ नहीं लाता है। 14 उपवास ठहराओ,
महासभा का एलान करो। बुजुर्गों को, वरन
देश-देश के सभी निवासियों को भी अपने
परमेश्वर याहवे के घर में इकट्ठे करके उनके
सामने गिड़गिड़ाओ। 15 उस दिन के कारण
हाय! क्योंकि प्रभु का दिन नज़दीक है। वह
सर्वशक्तिमान की ओर से बर्बादी के दिन की
तरह आएगा। 16 क्या खाने की चीज़ें हमारे
देखते-देखते बर्बाद नहीं हुई? क्या हमारे
परमेश्वर के घर की खुशी जाती नहीं रही?
17 ढेलों के नीचे बीज झुलस गए, भण्डार
सूने पड़े हुए हैं; खत्ते गिर पड़े हैं, क्योंकि
खेती बर्बाद हो चुकी है। 18 जानवर किस
तरह कराह रहे हैं? झुण्ड के झुण्ड गाय-बैल
परेशान हैं, क्योंकि उनके लिए खाने के लिए
कुछ नहीं है। ढेर सारी भेड़-बकरियाँ गुनाह
का फल भुगत रही हैं। 19 हे प्रभु, मैं आपके
सामने गिड़गिड़ाता हूँ, क्योंकि जंगल की
चराइयाँ झुलस चुकी है। मैदान के सारे पेड़
आग से जल चुके हैं। 20 जंगल के जानवर भी

आपके लिए हांफते हैं, क्योंकि पानी के सोते
सूख गए और जंगल की चराईयों को आग ने
खा लिया है।
2 सिय्योन में नरसिंगा फूँको; मेरे पवित्र
पहाड़ पर सांस बान्धकर फूँको! देश
के सब रहनेवाले काँप जाएँ, क्योंकि याहवे
का समय आने वाला है, नज़दीक है। 2 वह
अन्धेरे का समय है। वह बदली का मौसम
है और अन्धेरे की तरह फैलता है। जैसे
सुबह की रोशनी पहाड़ों पर फैलती है, वैसे
ही एक बड़ा और ताकतवर देश आएगा।
पुराने समयों में वैसा कभी भी न हुआ
था और न ही कभी किसी पीढ़ी में वैसा
होगा। 3 उसके आगे-आगे तो आग जलाती
जाएगी, और उसके पीछे-पीछे लौ। उसके
आगे की ज़मीन एदेन के बगीचे की तरह
होगी, लेकिन उसके पीछे की ज़मीन उजाड़
मरुस्थल बन जाएगी, और उससे कुछ बचेगा
नहीं। 4 उनकी शक्ल घोड़ों की तरह है और वे
सवारी के घोड़ों की तरह दौड़ते हैं। 5 उनके
कूदने की आवाज़ ऐसी होती है जैसे पहाड़ों
की चोटियों पर रथों के चलने की, या खूँटी
भस्म करती हुई लौ की, या जैसे लाईन लगाए
हुए ताकतवर फौजियों की आवाज़ होती है।
6 उनके सामने देश-देश के लोग पीड़ित होते
हैं, सभी के चेहरे फीके पड़ जाते हैं। 7 वे
बहादुर लोगों की तरह दौड़ते, और सैनिकों
की तरह शहरपनाहों पर चढ़ते हैं। वे अपने
अपने रास्ते पर चलते हैं, और कोई अपनी
लाईन से अलग न चलेगा। 8 वे एक दूसरे
को धक्का नहीं लगाते, वे अपने अपने रास्तों
पर चलते हैं। हथियारों का मुकाबला करने
से भी उनकी लाईन टूटती नहीं हैं। 9 वे नगर
में इधर-उधर दौड़ते, और शहरपनाह पर
चढ़ते हैं; वे घरों में ऐसे घुसते हैं जैसे चोर
खिड़कियों से। 10 उनके आगे पृथ्वी काँपती
है, और आकाश थरथराता है। सूरज और
चाँद काले हो जाते हैं, और तारे झिलमिलाते
नहीं। 11 याहवे अपने उस दल के आगे अपना
शब्द सुनाता है, क्योंकि उनकी सेना बहुत ही
बड़ी है; जो अपनी कही बात पूरा करने वाले
हैं, वह ताकतवर हैं, क्योंकि प्रभु का दिन
बड़ा और बहुत डरावना है; उसे कौन सह
पाएगा? 12 फिर भी याहवे यह कहते हैं, अब
भी सुनो, उपवास के साथ रोते-पीटते पूरे मन
से मेरे पास आओ। 13 अपने कपड़ों को नहीं,
अपने मन ही को फाड़कर अपने परमेश्वर
याहवे की ओर मुड़ जाओ, क्योंकि वह दया
करने वाले, देरी से गुस्सा करने वाले, तरस
से भरे हुए और दुःख देने के बाद बहुत बुरा
महसूस करते हैं। 14 क्या जाने वह मन बदलें
और ऐसी आशीष दें जिससे तुम्हारे परमेश्वर
याहवे का अन्नबलि और अर्घ दिया जाए।
15 सिय्योन में नरसिंगा फूँको; उपवास का
दिन रखो, महासभा को पवित्र करो। 16 बुज़ुर्ग
लोगों को बुलाओ। बच्चों और दूध पीने वाले
को भी इकट्ठा करो। दूल्हा अपनी कोठरी से
और दुल्हन अपने कोठरी से बाहर निकल
आए। 17 पुरोहित जो याहवे की सेवा करते हैं,
वे आंगन और वेदी के बीच में रो-रोकर कहें,
हे प्रभु, अपने लोगों पर तरस खाईए। और
अपने लोगों की बदनामी न होने दे। न ही दूसरे
देशों के लोग उनका उदाहरण न दे सकें।
देश-देश के लोग आपस में क्यों कह सकें
कि उनका परमेश्वर कहाँ गया? 18 तब याहवे
को अपने देश के बारे में गहरी जलन हुई,
और अपनी प्रजा पर तरस खाया। 19 उनसे
कहा, “सुनो, मैं अनाज और नया दाखमधु
और ताज़ा तेल तुम्हें देने वाला हूँ। जब वह
तुम्हें मिलेगा, तुम खुश हो जाओगे। और मैं
भविष्य में तुम्हारी बदनामी न होने दूँगा। 20 मैं
उत्तर की ओर से आई हुई फौज को तुम्हारे

पास से दूर करूँगा। और उसे एक सूखे व
उजाड़ देश में निकाल दूँगा। उसका आगा
पूरब की ओर और पीछा पश्चिम के समुद्र की
ओर होगा। उससे बदबू आएगी, और उसकी
सड़ी गन्ध मिलेगी, क्योंकि उसने बहुत बुरे
काम किए हैं। 21 हे देश, तुम डरो मत; लेकिन
खुशी मनाओ क्योंकि प्रभु ने बड़े-बड़े काम
किए हैं। 22 हे मैदान के जानवरो, मत डरो,
क्योंकि जंगल चारागाह में बदल जाएगा।
पेड़ फलेंगे। अंजीर का पेड़ और दाखलता
अपनी अपनी ताकत दिखाने लगेंगे। 23 हे
सिय्योनियो, तुम अपने परमेश्वर के कारण
खुश हो। उन्हीं में मगन रहो, क्योंकि तुम्हें
अपनाने के सबूत में ही उन्होंने तुम्हें पहली
बरसात दी है। 24 जिन वर्षों के उत्पादन
को दलवाली, रेंगनेवाली, उजाड़नेवाली और
कुतरनेवाली टिड्डियों से अर्थात मेरे भेजे हुए
बड़े दल ने खा लिया था, उनका नुकसान मैं
तुमको भर दूँगा। 25 और जिन वर्षों की उपज
अर्बे नाम टिड्डियों, और येलेक और हासील
ने, और गाजाम नाम टिड्डियों ने, अर्थात् मेरे
बड़े दल ने जिसको मैंने तुम्हारे लिए भेजा,
खा ली थी, मैं उसकी हानि तुमको भर दूँगा।
26 तब तुम्हें खाने की वस्तुओं की कमी न
होगी, तुम भरपूर होगे और अपने परमेश्वर
याहवे की बड़ाई करोगे, जिसने तुम्हारे लिए
अज़ीब काम किए हैं। तब मेरे लोगों को
शर्मिन्दा न होना पड़ेगा। 27 इस तरह तुमको
एहसास हो जाएगा कि मैं इस्त्राएल के
बीच में हूँ, और मैं ही तुम्हारा परमेश्वर हूँ
और कोई नहीं। मेरे लोग कभी शर्मिन्दा
न होंगे। 28 इसके बाद मैं सभी पर अपना
आत्मा उण्डेलूँगा। तुम्हारे बेटे-बेटियाँ नबूवत
करेंगे। तुम्हारे बुजुर्ग स्वप्न देखेंगे। तुम्हारे
जवान दर्शन देखेंगे। 29 मैं अपने दासों और
दासियों पर भी अपना आत्मा उण्डेलूँगा।
30 मैं आकाश में और पृथ्वी पर अज़ीब काम
करूँगा अर्थात् खून, आग और धूएँ के खम्भे
दिखाऊँगा। 31 प्रभु के महान और डरावने
दिन के आने से पहले सूरज अन्धेरा और चाँद
सा हो जाएगा। 32 जो कोई प्रभु का नाम लेगा,
वह मुक्ति पाएगा। क्योंकि सिय्योन पहाड़
पर, और यरूशलेम में, जैसा प्रभु ने कहा
है, मुक्ति पाने वाले होंगे, अर्थात बचने वाले,
जिन्हें प्रभु ने बुलाया है।

3 सुनो, जब मैं यहूदा और यरूशलेम की
दौलत लौटा ले आऊँगा, 2 मैं सारे देशों
को इकट्ठा करूँगा और उन्हें यहोशापात की
घाटी में ले जाकर इस्त्राएल की ओर से
जो मेरी अपनी प्रजा और मिरास है, उनका
इन्साफ करूँगा क्योंकि उन्होंने उसे तमाम
देशों में तितर-बितर किया है और मेरे देश
को बाँट लिया है। 3 उन्होंने तो मेरी प्रजा पर
चिट्ठियाँ डालीं, लड़का देकर यौन व्यापार
की कीमत चुकाई ,लड़का देकर वेश्या की
कीमत चुकाई और दाखमधु पीने के लिए
लड़की बेच डाली। 4 हे सोर, सीदोन और
पलिश्त के सब राज्यो तुम मेरे सामने क्या
हो? क्या तुम मुझको बदला दोगें? यदि दोगे
भी, तो मैं तुम्हारे बदला जल्दी, हाँ तुरन्त
ही तुम्हारे सिर पर लौटा दूँगा। 5 तुमने मेरे
चाँदी और सोने को ले लिया है, और कीमती
वस्तुओं को अपने मन्दिरों में पहुँचा दिया है,
6 और तुमने यहूदा और यरूशलेम के लोगों
को यूनानियों के हाथ इसलिए बेच डाला
है कि वे अपने मुल्क से दूर किए जाएँ।
7 इसलिए सुनो, मैं उनको उस जगह से, जहाँ
तुमने उन्हें बेचा है, बुला ले आऊँगा। और
तुम्हारा बदला, तुम्हारे सिर पर लौटा दूँगा।
8 और तुम्हारे बेटे और बेटियों को यहूदियों
के हाथ बिकवा दूँगा। और वे उन्हें दूर देश के
रहने वाले शबाइयों के हाथ बेचे देंगे; क्योंकि

प्रभु ने यह कहा है। 9 देश देश में जाकर
ऐलान करो, जंग की तैयारी की जाए, बहादुर
सैनिकों को जोश दिलाओ, वे सभी हमला
बोलें। 10 अपने हलों की फालों को पीटकर
तलवार, और अपने हँसियों को पीटकर भाले
बनाओ। कमज़ोर अपने आपको ताकतवर
कहे। 11 हे आसपास के रहने वालों जल्दी
करो, आओ, इकट्ठे हो जाओ। हे प्रभु,
आप अपने बहादुर सैनिकों को वहाँ ले
आईये। 12 देश देश के लोग जोश में आकर
यहोशापात की घाटी में चढ़ जाएँ, क्योंकि
वहाँ मैं आसपास के सभी देशों का इन्साफ
करने बैठूँगा। 13 हँसिया लगाओ, क्योंकि
फसल तैयार है। आओ, अंगूर को कुचलो,
क्योंकि हौज भर चुका है और रसकुण्ड
छलकने लगे हैं। इनकी बुराई बढ़ चुकी
है। 14 फैसले की तराई में भीड़ की भीड़!
फैसले की तराई में प्रभु का दिन नज़दीक है।
15 सूरज और चाँद की रोशनी जाती रहेगी,
और तारों की रोशनी भी। 16 क्योंकि प्रभु
सिय्योन से गरजेंगे, और यरूशलेम से अपना
शब्दनाद करेंगे। आकाश और पृथ्वी काँप
उठेंगे, लेकिन याहवे अपनी प्रजा के लिए
शरणस्थान और इस्त्राएलियों के लिए किला
ठहरेंगे। 17 तब तुम्हें पता लगेगा कि मैं ही
पवित्र पहाड़ सिय्योन में रहने वाला तुम्हारा
परमेश्वर याहवे हूँ। तब यरूशलेम पवित्र
ठहरेगा, और उसमें परदेशी का आना-जाना
नहीं होगा। 18 और उस समय ऐसा होगा
कि पहाड़ों से नया दाखरस टपकेगा, और
पहाड़ियों पर से दूध बहेगा, और यहूदा के
सभी नालों में पानी भर जाएगा; और प्रभु के
घर से ही एक सोता फूटेगा, जिससे शित्तीम
नाम के नाले को पानी मिलेगा। 19 मिस्र उजड़
जाएगा और एदोम सुनसान जंगल बनेगा,
क्योंकि वे यहूदियों के प्रति क्रूर रहे हैं और
उनके देश में बेगुनाहों की जान ली गई है।
20 लेकिन यहूदा हमेशा और यरूशलेम पीढ़ी
से पीढ़ी तक बना रहेगा। 21 और मैं उनके
रक्त का बदला लूँगा, जो अब तक मैंने नहीं
लिया है। क्योंकि प्रभु सिय्योन में रहते हैं।

DUSTY SANDALS
All Rights Reserved. www.dustysandals.com